

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

हिंदी भाषा का विकास

प्रस्तोत्री

मंजू पटेल

असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी

श्री भगवान दास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं-आठवीं शताब्दी से ही 'पद्य' रचना प्रारम्भ हो गयी थी। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ट' से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते हैं।^[1] चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने इसी अवहट्ट को 'पुरानी हिन्दी' नाम दिया। साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएँ मिलती हैं वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रितकवि और चारण नीति, गार, शौर्य, पराक्रम के वर्णन से अपनी साहित्य-रुचि का परिचय दिया करते थे। यद् रचना-परम्परा आगे चलकर शौरसेनी अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी में कई वर्षों तक चलती रही। पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने 'देसी भाषा' कहा है, किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रारम्भ में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था। इस शब्द से उनका तात्पर्य 'भारतीय भाषा' का था। मध्य युग में भक्ति आन्दोलन में हिन्दी खूब फली फूली। पूरे देश के भक्त कवियों ने अपनी वाणी को जन-जन तक पहुँचाने के लिये हिन्दी का सहारा लिया। कभी 'अपभ्रंश' और अब - हिन्दी^[2] आलोचक कह सकते हैं कि 'वैदिक संस्कृत' और 'हिन्दी' में तो जमीन-आसमान का अन्तर है। पर ध्यान देने योग्य है कि हिब्रू, रूसी, चीनी, जर्मन और तमिल आदि जिन भाषाओं को बहुत पुरानी बताया जाता है, उनके भी प्राचीन और वर्तमान रूपों में जमीन-आसमान का अन्तर है; पर लोगों ने उन भाषाओं के नाम नहीं बदले और उनके परिवर्तित स्वरूपों को 'प्राचीन', 'मध्यकालीन', 'आधुनिक' आदि कहा गया, जबकि 'हिन्दी' के सन्दर्भ में प्रत्येक युग की भाषा का नया नाम रखा जाता रहा

हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाओं पर विचार करते समय हमारे सामने हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का प्र दसवीं शताब्दी के आसपास की प्राकृताभास भाषा तथा अपभ्रंश भाषाओं की ओर जाता है। अपभ्रंश शब्द की व्युत्पत्ति और जैन रचनाकारों की अपभ्रंश कृतियों का हिन्दी से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जो तर्क और प्रमाण हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में प्रस्तुत किये गये हैं उन पर विचार करना भी आवश्यक है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं-आठवीं शताब्दी से ही पद्य-रचना प्रारम्भ हो गयी थी।

साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएँ मिलती हैं वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रित कवि और चारण नीति, गार, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य-रुचि का परिचय दिया करते थे। यह रचना- परम्परा आगे चलकर शौरसेनी अपभ्रंश या 'प्राकृताभास हिन्दी' में कई वर्षों तक चलती रही। पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने देशी भाषा कहा है, किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि हिन्दी शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ। प्रगतिवाद से प्रभावित कथाकारों में यशपाल, उपेंद्रनाथ अशक, अमृतलाल नागर और नागार्जुन आदि विशिष्ट हैं। आलोचकों में रामविलास शर्मा, नामवर सिंड, विजयदेव नारायण साही प्रमुख हैं। कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रंगेय राघव, शिवमंगल सिंह सुमन आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। निबन्ध विधा में इस दौर में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्या निवास मिश्र और कुबेरनाथ राय ने विशेष ख्याति अर्जित की। नए मनोविज्ञान से प्रभावित प्रयोगों के लिए सचेष्ट कथाकारों में अज्ञेय प्रमुख हैं। मनोविज्ञान से गंभीर रूप में प्रभावित इलाचंद्र जोशी और जैनेन्द्र हैं। इन लेखकों ने व्यक्तिमन के अवचेतन का उद्घाटन कर नया नैतिक बोध जगाने का प्रयत्न किया। जैनेन्द्र और अज्ञेय ने कथा के परम्परागत ढाँचे को तोड़कर शैलीशिल्प सम्बन्धी नए प्रयोग किए। परवर्ती लेखकों और कवियों में वैयक्तिक प्रतिक्रियाएँ अधिक प्रखर हुईं। समकालीन परिवेश से वे पूर्णतः संसक्त हैं। उन्होंने समाज और साहित्य की मान्यताओं पर गहरा प्रश्नचिह्न लगा दिया है। व्यक्तिजीवन की लाचारी, कुण्ठा, आक्रोश आदि व्यक्त करने के साथ ही वे वैयक्तिक स्तर पर नए जीवनमूल्यों के अन्वेषण में लगे हुए हैं। उनकी रचनाओं में एक ओर सार्वभौम संत्रास और विभीषिका की छटपटाहट है तो दूसरी ओर व्यक्ति के अस्तित्व की अनिवार्यता और जीवन की संभावनाओं को रेखांकित करने का उपक्रम

भी। हमारा समकालीन साहित्य आत्यंतिक व्यक्तिवाद से ग्रस्त है और यह उसकी सीमा है। पर उसका सबसे बड़ा बल उसकी जीवनमयता है जिसमें भविष्य की सशक्त संभावनाएँ निहित हैं।

650 ईसा पूर्व - संस्कृत का वैदिक संस्कृत के बाद का क्रमबद्ध विकास

500 ईसा पूर्व - बौद्ध तथा जैन की भाषा प्राकृत का विकास (पूर्वी भारत)।

400 ईसा पूर्व - पाणिनि ने संस्कृत व्याकरण लिखा (पश्चिमी भारत)। वैदिक संस्कृत से पाणिनि की काव्य संस्कृत का मानकीकरण ब्राह्मी लिपि का विकास

पाँचवीं सदी ईसा पूर्व से पहले - भारत में ब्राह्मी लिपि का विकास

ब्राह्मी लिपि का विकास पाँचवीं सदी ई०पू० से 350 ई० - ब्राह्मी लिपि का ज्ञात प्रयोग काल।

320 ई० (के आसपास) - ब्राह्मी लिपि से गुप्त लिपि का विकास।

छठी सदी ईस्वी - सिद्धमात्रिका लिपि का गुप्त लिपि की पश्चिमी शाखा की पूर्वी उपशाखा से विकास। इसे न्यूनकोणीय लिपि भी कहा गया है।[6]

अपभ्रंश तथा आदि-हिन्दी का विकास

प्रथम सदी ई०पू०/5वीं सदी ई० - कालिदास ने 'विक्रमोर्वशीयम्' में अपभ्रंश का प्रयोग किया।

550 ई० - वल्लभी के दर्शन में अपभ्रंश का प्रयोग।

769 - सिद्ध सरहपाद (जिन्हें कई लोग हिन्दी का पहला कवि मानते हैं) ने 'दोहाकोश' लिखा। 779 - उद्योतन सूरि की 'कुवलयमाला' में अपभ्रंश का प्रयोग।

800 - संस्कृत में बहुत सी रचनाएँ लिखी गयीं।

934 - देवसेन की 'सावयधम्म दोहा' (श्रावकधर्म दोहा या श्रावकाचार) {कुछ लोग इसे भी हिन्दी की पहली पुस्तक मानते हैं}।[7]

1100 - आधुनिक देवनागरी लिपि का प्रथम स्वरूप।

1145-1229 - हेमचंद्राचार्य ने सिद्ध हेम शब्दानुशासन नामक अपभ्रंश-व्याकरण की रचना की। अपभ्रंश का अस्त तथा आधुनिक हिन्दी का विकाससंपादित करें

1184 ई० - शालिभद्र सूरि रचित भरतेश्वर बाहुबलि रास 205 छन्दों का आकार में छोटा परन्तु शब्द-चयन एवं भाव सभी दृष्टियों से अत्यन्त उत्तम काव्य है।[8] पुष्ट तर्कों से यही हिंदी की पहली रचना सिद्ध होती है।[9]

1253-1325 - अमीर खुसरो की पहेलियों तथा मुकरियों में "हिन्दवी" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग।

1370 - "हंसाउली" (हंसावली) के कवि असाइत ने प्रेम कथाओं की शुरुआत की।

1399-1512 - कबीर की रचनाओं ने निर्गुण भक्ति की नींव रखी।[10]

- 1400-1479 - अपभ्रंश के आखिरी महान कवि रघु
- 1450 - रामानन्द के साथ "सगुण भक्ति" की शुरुआत।
- 1580 - शुरुआती दक्खिनी का कार्य "कालमितुल हकायत"—बुर्हानुद्दीन जानम द्वारा।
- 1585 - नाभादास ने "भक्तमाल" लिखी।
- 1601 - बनारसीदास ने हिन्दी की पहली आत्मकथा "अर्ध कथानक" लिखी।
- 1604 - गुरु अर्जुन देव ने कई कवियों की रचनाओं का संकलन "आदि ग्रन्थ" निकाला।
- 1532-1623 - गोस्वामी तुलसीदास ने "रामचरित मानस" की रचना की।
- 1623 - जटमल ने "गोरा बादल री बात" (कुछ लोगों के विचार से खड़ी बोली की पहली रचना) लिखी।
- 1643 - आचार्य केशव दास ने "रीति" के द्वारा काव्य की शुरुआत की।
- 1645 - उर्दू का आरम्भ
- आधुनिक हिन्दी
- संपादित करें
- 1796 - देवनागरी रचनाओं की शुरुआती छपाई।
- 1826 - "उदन्त मार्तण्ड" हिन्दी का पहला साप्ताहिक।
- 1837 - ओम् जय जगदीश के रचयिता श्रद्धाराम फुल्लौरी का जन्म।
- 1868 - राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' का लिपि सम्बन्धी प्रतिवेदन – फारसी लिपि के स्थान पर नागरी लिपि और हिन्दी भाषा के लिए पहला प्रयास राजा शिवप्रसाद का उनके लिपि सम्बन्धी प्रतिवेदन कोर्ट कैरेक्टर इन द अपर प्रोविन्स ऑफ़ इण्डिया से आरम्भ हुआ।
- 1877 - अयोध्या प्रसाद खत्री का हिन्दी व्याकरण, (बिहार बन्धु प्रेस)
- 1881 - वर्ष 1881 ई. तक आते-आते उत्तर प्रदेश के पड़ोसी प्रान्तों बिहार, मध्य प्रदेश में नागरी लिपि और हिन्दी प्रयोग की सरकारी आज्ञा जारी हो गई तो उत्तर प्रदेश में नागरी आन्दोलन को बड़ा नैतिक प्रोत्साहन मिला।
- 1893 - काशी नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना
- 1 मई 1910 - नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना
- 1950 - हिन्दी भारत की राजभाषा के रूप में स्थापित।
- 10-14 जनवरी 1975 - नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित

दिसम्बर, 1993 - मॉरीशस में चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन तथा उसके बाद विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना

1997 - वर्धा में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना का अधिनियम संसद द्वारा पारित

2000 - आधुनिक हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास

2020 - हिन्दी में काव्य एवं ब्लॉग का डिजिटल लेखन, डिजिटल पत्रिकाओं का प्रकाशन, वीडियो द्वारा काव्यपाठ का प्रचलन

सन्दर्भ ग्रन्थ

हिन्दी भाषा विकास एवं उद्गम Panchshil prakashan

हिन्दी भाषा विकास एवं उद्गम एवं मानकरूप राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

भाषा विज्ञान डॉ भोला नाथ तिवारी किताब महल इलाहाबाद

भारतीय भाषाविज्ञान चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

भाषा विज्ञान हिन्दी भाषा और लिपि लोकभारती प्रकाशन



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE